प्रवाह
2015

स्मारिका-राष्ट्रीय युवा उत्सव

30th Inter-University National Youth Festival 2015

hosted by **Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore**

under the aegis of **Association of Indian Universities (AIU)**

Sponsored by **Ministry of Youth Affairs and Sports, Govt. of India**

NATIONAL YOUTH FESTIVAL || 12 FEB-2015

राष्ट्र की अखंडता का संदेश देगा युवा उत्सव : सैमसन डेविड

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय राष्ट्रीय युवा महोत्सव २०१५ के लिए पूरी तरह से तैयार है। युवा महोत्सव में देश भर से करीब ७० प्रमुख विश्वविद्यालय के विद्यार्थी भाग लेंगे। इस महोत्सव का आयोजन भारतीय विश्वविद्यालय संघ एवं युवा कार्यक्रम तथा खेल मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है। युवा महोत्सव के ३० वर्षों के इतिहास में यह पहला मौका है जब मध्यप्रदेश के किसी विश्वविद्यालय को इसके आयोजन की मेजबानी मिली है। युवा महोत्सव के उद्देश्यों, कार्यक्रम के स्वरूप एवं देवी अहिल्या विश्वविद्यालय को मिली इसकी मेजबानी पर भारतीय विश्वविद्यालय संघ के संयुक्त सचिव डेविड सैमसन ने प्रवाह संवाददाता से अपने विचार साझा किए। इस बार के युवा महोत्सव की मेजबानी देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर के कुलपति प्रो. धीरेन्द्र पाल सिंह के नवाचारी प्रयासों से मिली है। डेविड सैमसन ने बताया कि राष्ट्रीय युवा महोत्सव २०१५ में देश भर से आएं युवाओं के लिए एक सुनहरा अवसर एवं शानदार अनुभव होगा, ऐसी मेरी आशा है। यह महोत्सव एक ऐसा प्लेटफार्म होगा जहां वो अपनी कला का प्रदर्शन कर सकते हैं और खास बात यह है कि यहां उनको विविध संस्कृतियों को देखने का मौका मिलेगा। उन्होंने कहा कि यह युवा उत्सव समानता और राष्ट्र की अखंडता का संदेश देगा। युवा अपने अंदर निहित उर्जा के जरिए संपूर्ण राष्ट्र की एकता एवं अखंडता, भारतीय मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति का संदेश दे सकते हैं। इस वर्ष राष्ट्रीय युवा महोत्सव को आयोजित करने का अवसर देवी अहिल्या विश्वविद्यालय को दिया गया है जो विश्वविद्यालय के लिए गौरव का विषय होगा साथ ही विश्वविद्यालय के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा।

- सृष्टि सावंत

सांस्कृतिक वैभव से संपन्न शहर - इंदौर

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर द्वारा यह वर्ष स्वर्ण जयंती के रूप में भी मनाया जा रहा है। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर को भारतीय विश्वविद्यालय संघ नई दिल्ली ने ३०वें राष्ट्रीय अंतर-विश्वविद्यालयीन युवा उत्सव २०१५ को आयोजित करने के लिए चयनित किया है। यह भी उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय एकमात्र 'ए' ग्रेड प्राप्त राज्य विश्वविद्यालय है। यह इस विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात है। भारतीय कला एवं संस्कृति की समृद्ध परंपरा से युवाओं को जोड़े रखना, इस तरह के युवा उत्सवों का मुख्य उद्देश्य होता है। इंदौर सांस्कृतिक वैभव से संपन्न शहर है। यह सुर कोकिला लता मंगेशकर, सलमान खान जैसे कलाकारों की जन्म स्थली है। प्रसिद्ध पार्श्व गायक किशोर कुमार की शिक्षा भी इसी शहर में हुई है। सिनेमा जगत के कई कलाकार इस शहर की माटी से जुड़े हुए हैं तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पहचान बनाए हुए हैं।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर द्वारा १२ से १६ फरवरी २०१५ तक ३०वें राष्ट्रीय अंतर विश्वविद्यालयीन युवा उत्सव 'प्रवाह' का आयोजन किया जा रहा है। इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय आयोजन में ५ जोन के लगभग ७० विश्वविद्यालय भाग लेंगे। प्रत्येक विश्वविद्यालय से राष्ट्रीय युवा उत्सव में नाट्य, संगीत, नृत्य साहित्य आदि क्षेत्रों की लगभग २४ विधाओं के प्रतियोगी प्रतिस्पर्धा में भाग लेंगे। इस महत्वपूर्ण एवं प्रतिष्ठापूर्ण आयोजन के सभी प्रतिभागी छात्र-छात्राओं, संगतकारों, दल प्रबंधकों, निर्णायक मंडल व अन्य सभी विशिष्ट सम्माननीय अतिथियों का इस भव्य आयोजन में मैं स्वागत एवं अभिनंदन करता हूँ एवं यह एक सफल आयोजन हो, ऐसी कामना करता हूँ। - डॉ. बी.के. त्रिपाठी, अधिष्ठाता, छात्र कल्याण विभाग

ऊंची उड़ान को तैयार हम...

कुलपति प्रो. धीरेन्द्र पाल सिंह से सुश्री अमिता की बातचीत

■ ***आज के संदर्भ में युवा उत्सव की उपयोगिता क्या है?***

मुझे लगता है कि आज के युग में युवा उत्सव की उपयोगिता अधिक है, क्योंकि युवा उत्सव न केवल हमारे जीवन में एक नई ऊर्जा का संचार करता है वरन् इस ऊर्जा को एक सही मंच भी प्रदान करता है। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों को एक स्थान पर लाकर आपस में समरसता, समतुल्यता और सहजता का भाव पैदा करते हैं। साथ ही साथ ये उत्सव हमारे देश की सांस्कृतिक धरोहर को उजागर करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

■ ***देवी अहिल्या विश्वविद्यालय पर राष्ट्रीय युवा उत्सव की बड़ी जिम्मेदारी है, इसे आप किस रूप में देखते हैं?***

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के लिए यह बहुत बड़ा अवसर और चुनौती दोनों है। मैं इसका स्वागत करता हूँ। यह देवी अहिल्या विश्वविद्यालय का सौभाग्य है कि भारतीय विश्वविद्यालय संघ व भारत सरकार के युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय द्वारा यह महती जिम्मेदारी सौंपी गई है। यह चुनौतीपूर्ण इसलिए है, क्योंकि संपूर्ण भारत से करीब ७० विश्वविद्यालयों के लगभग १००० विद्यार्थी इस कार्यक्रम में सम्मिलित होंगे। उन सभी के आवास, भोजन एवं यातायात की व्यवस्था तथा पूरे कार्यक्रम को सुचारू रूप से संपन्न कराने का दायित्व हम पर है। ५ मुख्य गतिविधियों एवं २४ विधाओं में प्रतियोगिता का आयोजन होगा, जिसके लिए विश्वविद्यालय ने पूरी तैयारियां की है। विभिन्न समितियों का निर्माण कर कार्यों का विभाजन किया गया है। हम आशा करते हैं कि व्यवस्थित व सुनियोजित रूप से इसे सफलतापूर्वक संपन्न किया जा सकेगा।

■ ***आज के संदर्भ में युवाओं की भूमिका से क्या आप संतुष्ट हैं?***

युवाओं की भूमिका समय सापेक्ष रहती है उदाहरणार्थ स्वतंत्रता से पूर्व युवाओं के समक्ष देश को स्वतंत्र कराने जैसी चुनौती थी। अतः युवा स्वतंत्रता संग्राम में जुड़े व संघर्ष का रास्ता अपनाया। इसी प्रकार आज हम विकासशील से विकसित राष्ट्र बनने की राह पर चल रहे हैं तो युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। आज युवा विभिन्न क्षेत्रों में अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए अच्छा कर रहे हैं, किंतु यही हमें अपने देश को समर्थ, सक्षम, शक्तिशाली व विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है तो युवाओं को अपनी भूमिका को और अधिक गंभीरता से लेना होगा।

■ ***अतीत के पृष्ठ पलटकर अपने छात्र जीवन में झांकने पर आज और कल में क्या अंतर पाते हैं?***

काफी अंतर दिखाई देता है और सबसे बड़ा अंतर सूचना प्रौद्योगिकी के विस्तार से आया है। जब हम छात्र थे, तब अध्ययन व अध्यापन के जो तरीके थे, वह अब भिन्न है। आज ई-लर्निंग का वर्चुअल क्लासेस का जमाना है। ओपन डिस्टेंस लर्निंग का युग चल रहा है, जिससे हम समझ सकते हैं कि पूरा परिवेश बदल गया है। साथ ही संसाधनों में भी अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। यदि हम अपने छात्र जीवन की बात करें तो उस समय ब्लैक बोर्ड के माध्यम से ही टीचिंग होती थी। केवल कक्षा की शिक्षा एकमात्र साधन था। लेकिन अब कई सारे माध्यम देखने को मिलते हैं। जैसा कि मैंने कहा सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हम ई-बुक्स व ई-जर्नल्स भी कम्प्यूटर पर देख सकते हैं जो कि बहुत बड़ा परिवर्तन है। जो हमें आज और कल में दिखाई देता है। भविष्य में ये और अधिक दृष्टिगोचर होगा। लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि हम जिस मुकाम पर अभी हैं उसमें सर्वश्रेष्ठ क्या हो सकता है? युवा उसे करने का प्रयास करते हुए राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका सुनिश्चित करें।

■ ***क्या आज की शिक्षा सही नागरिक बना रही है? और उसमें विश्वविद्यालयों की कितनी भूमिका है?***

ये बहुत महत्वपूर्ण सवाल है, मैं आपको बताता हूँ कि हमारे प्राचीन विश्वविद्यालयों की, जिसमें काशी विश्वविद्यालय भी है और मेरा सौभाग्य है कि मैं वहां का कुलपति रहा। विश्वविद्यालय की स्थापना इसलिए की गई थी कि जिम्मेदार और चरित्रवान युवाओं का निर्माण हो। राष्ट्र निर्माण में उनका योगदान सुनिश्चित किया जा सके। शिक्षा के मंदिरों और विश्वविद्यालयों की ये जिम्मेदारी है कि ये अच्छे नागरिक तैयार करें, किंतु मुझे लगता है कि वर्तमान में शिक्षा के प्रति व्यावसायिक दृष्टिकोण अधिक विकसित हो रहा है। आज आवश्यकता है कि जहां एक ओर हम प्रोफेशनल कम्पीटेंट युवा तैयार करें, वहीं दूसरी ओर उन्हें ऐसा नागरिक भी बनाएं जिसमें राष्ट्र, समाज और पर्यावरण के प्रति सजगता तथा संवेदनशीलता हो और उनमें जिम्मेदारी का अहसास हो। चरित्रवान, राष्ट्र प्रेम और मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत युवाओं का निर्माण करना विश्वविद्यालयों की महती जिम्मेदारी है। विश्वविद्यालयों को और अधिक व्यवस्थित रूप से विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से मानवीय मूल्यों के संपूर्ण विकास के लिए कार्य करना चाहिए।

■ ***युवा उत्सव के माध्यम से आप युवाओं के लिए क्या संदेश देंगे?***

मेरा संदेश यह है कि यह बहुत बड़ा अवसर है जो देवी अहिल्या विश्वविद्यालय को मिला है। आप सब युवा अपनी अंतर्निहित शक्ति एवं ऊर्जा को पहचानें। अपने कौशल का सही उपयोग कर अपनी ऊर्जा को सकारात्मक गतिविधियों में लगाएं। राष्ट्र को सांस्कृतिक, साहित्यिक व अन्य क्षेत्रों में और अधिक संपन्न व समृद्ध बनाने में अपना योगदान दें। इसी कामना के साथ मैं सभी युवाओं को शुभकामनाएं देता हूँ।

इन्दौर की एक झलक

इन्दौर, मध्यप्रदेश का एक प्रमुख शहर है। इसे मध्यप्रदेश की आर्थिक राजधानी के नाम से जाना जाता है। इस शहर में दो विश्वविद्यालय सहित राजघराने भी हैं जो इन्दौर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को दर्शाता है।

इन्दौर एक औद्योगिक शहर है। यहां लगभग ४ हजार से अधिक छोटे बड़े उद्योग हैं। इन्दौर की जनसंख्या करीब २६लाख ३५हजार १२७ है।

इन्दौर वैज्ञानिक, तकनीकी अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इन्दौर भारत का इकलौता शहर है जहां आई.आई.एम. और आई.आई.टी. जैसे महत्वपूर्ण संस्थान है। इन्दौर में लगभग ६० ईंजीनियरिंग कॉलेज सहित कई मेडिकल कॉलेज भी हैं जो यहां की समृद्ध शिक्षा व्यवस्था को भी दर्शाता है।

सोनल चावला

यातायात

इन्दौर शहर भारत के प्रमुख शहरों से हवाई मार्ग से जुड़ा हुआ है। रेल यातायात की दृष्टि से इंदौर मुख्य रेल मार्ग पर स्थित नहीं है लेकिन मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से नजदीक होने के कारण यहां के लोगों को रेल यात्रा में कोई परेशानी नहीं होती है। इन्दौर की बस सेवा यहां की जान है। इन्दौर नगर निगम की नगर बस सेवा और वातानुकूलित आई.बस जो पूरे इन्दौर को जोड़ती है।

प्रमुख ऐतिहासिक, धार्मिक एवं दर्शनीय स्थल

- राजवाड़ा
- कांच मंदिर
- अन्नपूर्णा मंदिर
- गांधी हॉल
- खजराना मंदिर
- देवगुराड़ीया
- गोमटगिरी मंदिर
- जबरेश्वर महादेव मंदिर

इन्दौर की सरकारी एजेंसियाँ

- इन्दौर जिला प्रशासन
- इन्दौर पुलिस प्रशासन
- नगर पालिका
- इन्दौर विकास प्राधिकरण
- मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

पार्क और मनोरंजन

- अटल बिहारी वाजपेयी रीजनल पार्क
- कमला नेहरू प्राणी संग्रहालय
- मेघदूत गार्डन
- सिटी फॉरेस्ट बिजोली हप्सी

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय

इतिहास के झरोखे से

अनुरित पट्वर्धन

विश्वविद्यालय ने पांच दशकों का लंबा सफर तय किया

"धियो यो न: प्रचोदयात्" के आदर्श वाक्य के साथ स्थापित देवी अहिल्या विश्वविनालय आज देश ही नहीं विदेश के अग्रिम विश्वविद्यालयों में शामिल है।

ज्ञान- विज्ञान की विविध शाखाओं सहित उच्च शिक्षा के समग्र क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने प्रगति की है। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय ने बौद्धिक प्रगति के साथ ही मानवीय मूल्यों के विकास में नित नए आयाम स्थापित किए हैं। हाल ही में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय ने शिक्षा जगत में स्थापना के पचास वर्ष पूरे किए हैं। १९६४ से अब तक विश्वविद्यालय ने पांच दशकों का लंबा सफर तय किया है। अपनी स्थापना से लेकर आज तक विश्वविद्यालय ने कई पड़ाव एवं कई मंजिलें तय की है। राजमाता देवी अहिल्या की नगरी इन्दौर में स्थापित यह विश्वविद्यालय आज विशाल क्षेत्र में शिक्षा का प्रकाश फैला रहा है। विश्वविद्यालय गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के क्षेत्र में नवीनतम् प्रतिभा का सृजन कर रहा है। विश्वविद्यालय ने वैश्विक पटल पर अपनी अलग पहचान स्थापित की है। भौतिकी, गणित, रसायन विज्ञान, पत्रकारिता और कंप्यूटर पाठ्यक्रम में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय को हाल ही में नैक द्वारा "ए" ग्रेड प्रदान की गई है। यह प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय है जिसे यह गौरव प्राप्त है। इसकी उपलब्धियों ने हम सबको गौरवान्वित किया है। इन्दौर में उच्च शिक्षा की उज्ज्वल परंपरा रही है। विश्वविद्यालय की स्थापना इन्दौर विश्वविद्यालय अधिनियम १९६० के द्वारा सन् १९६४ में की गई थी। पहले इसका नाम इन्दौर विश्वविद्यालय था। बाद में प्रात:स्मरणीय लोकमाता देवी अहिल्या बाई होलकर के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान के प्रतीक स्वरूप इसका नाम देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,इन्दौर किया गया है।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय को उद्भव से वर्तमान स्वरूप लेने में पचास वर्ष लगे।

इन्दौर में मध्यभारत क्षेत्र के लिए विश्वविद्यालय की परिकल्पना ने साढ़े चार दशक से अधिक काल तक गर्भस्थ रहने का रिकार्ड कायम किया है। बड़ी रोमांचक है इन्दौर में विश्वविद्यालय की यह विकास गाथा इन्दौर में शिक्षा का प्रसार एवं विकास की विस्तृत पृष्ठभूमि रही है। यहां आधुनिक शिक्षा पद्धति की पहली पाठशाला १८४१ में रेसिडेंसी स्कूल की स्थापना के साथ शुरू हुई। इस गौरव गाथा को जीवंत घटक रही है, इन्दौर क्रिश्चियन कॉलेज तथा होलकर कॉलेज जैसी शतायु पार कर चुके शिक्षण संस्थान।

इन्दौर में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हुए विकास की कहानी में एक मई १९६४ का दिन गौरव दिवस के रूप में माना जाना चाहिए। इसी ऐतिहासिक दिवस पर इन्दौर में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी। इसके साथ एक सच यह भी है कि सेंट्रल इण्डिया के सबसे बड़े शैक्षणिक शहर इन्दौर को विश्वविद्याल पाने का गौरव वर्षों पहले मिल जाना था।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय को मुख्य रूप से तीन परिसर में स्थापित किया गया है। विश्वविद्यालय का प्रशासनिक केन्द्र नालंदा परिसर कहलाता है जो कि आर.एन.टी. मार्ग पर स्थित है। विश्वविद्यालय का मुख्य शिक्षा केन्द्र तक्षशिला परिसर खंडवा रोड़ पर स्थित है जो कि ५१० एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है। तक्षशिला परिसर के अंतर्गत विश्वविद्यालय के २८ शिक्षण संस्थान है।

विश्वविद्यालय के अवंतिका परिसर में मुख्य रूप से विश्वविद्यालय का प्रौद्योगिकी संस्थान स्थित है जो इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी के नाम से जाना जाता है। यह परिसर १५४ एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है।

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित शिक्षण संस्थानों में एक हजार से ज्यादा छात्र-छात्राएं स्नातक एवं स्नातकोत्तर अवधि के विद्यार्थी हैं वहीं देवी अहिल्या विश्वविद्यालय से संबद्ध ३०० से ज्यादा कॉलेजों में ३ लाख से अधिक विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के पास स्वयं का एफ.एम. रेडियो स्टेशन है जिसका नाम ज्ञानवाणी है। ज्ञानवाणी की स्थापना जून २००६ में लोगों को शिक्षित करने हेतु की गई थी जिसका संचालन विश्वविद्यालय के विभाग एजुकेशनल मल्टी मीडिया रिसर्च सेंटर से किया जाता है। २०१४ में विश्वविद्यालय को नैक द्वारा "ए" ग्रेड प्रदान किया गया है और अब विश्वविद्यालय भारत के मॉडल विश्वविद्यालयों की दौड़ में अग्रिम पंक्ति में है।

दो ज्योतिर्लिंग के बीच इंदौर

ओंकारेश्वर

देश के बारह ज्योतिर्लिंग में से एक है ममलेश्वर, जो ओंकारेश्वर में स्थित है। ओंकारेश्वर इंदौर शहर से ७७ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह तीर्थ नर्मदा नदी के किनारे स्थित है। यहां देश ही नहीं, विदेशों से भी पर्यटक ओंकारेश्वर दर्शन के लिए आते हैं। कहते हैं जो मनुष्य इस तीर्थ में पहुंचकर अन्नदान, तप, पूजा आदि करता है, मरणोपरांत उसे भगवान शिव के लोक में स्थान प्राप्त होता है।

कहा जाता है कि पूर्वकाल में यहां एक ही शिवलिंग था, जो बाद में दो हिस्सों में विभक्त हो गया। एक हिस्सा ओंकार के नाम से और दूसरा परमेश्वर या अमलेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुआ है। आज यह शिवलिंग प्रदेश ही नहीं, बल्कि भारत सहित विदेशों तक प्रसिद्ध है।

ओंकारेश्वर में मुख्य रूप से कार्तिक उत्सव, महाशिवरात्रि और नर्मदा जयंती मनाई जाती है।

महादेव की नगरी उज्जैन

हिन्दुओं का पवित्र शहर उज्जैन, इंदौर से ५५ किलोमीटर दूर बसा है। यहां हर नुक्कड़ पर एक मंदिर देखा जा सकता है। विश्व के बारह ज्योतिर्लिंग में से एक उज्जैन में 'महाकाल' के नाम से स्थित है। इस ज्योतिर्लिंग को उज्जैन शहर की शान भी कहा जाता है। यहां आपको भस्म आरती देखने को मिलती है। उज्जैन क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है। यहां के कुछ प्रसिद्ध मंदिरों में मंगलनाथ, गोपाल मंदिर, हरसिद्धि मंदिर, चिंतामणि गणेश मंदिर और जयसिंह पुरा मंदिर शामिल है।

महेश्वर भी आकर्षण का केंद्र

विरासत में समृद्ध आकर्षण के स्थानों में महेश्वर एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। चाहे वे किले हो, घाट हो, महल हो, मंदिर हो या अन्य आकर्षण केंद्र, पर्यटक भारी संख्या में महेश्वर रुक कर आनंद लेते हैं। महेश्वर की उच्च श्रेणी की अनोखी वास्तुकला में अक्सर पर्यटक आश्चर्यचकित रह जाते हैं।

महेश्वर में भगवान शिव के कई मंदिर है और इस स्थान का नाम का शाब्दिक अर्थ भी 'भगवान महेश्वर का घर' है। महेश भगवान का एक नाम है। इस शहर में नि:संदेह ही सभी पर्व हर्ष और उल्लास के साथ मनाए जाते हैं। यहां मनाए जाने वाले कुछ उत्सवों में महामृत्युंजय रथ यात्रा, भगवान गणेश और नवरात्र त्योहार प्रमुख है। महेश्वर में छुट्टियां बिताने का सर्वश्रेष्ठ समय सर्दियों का है। यहां आप अपने परिवार के लिए प्रसिद्ध साड़ी खरीद सकते है।

मालवा का कश्मीर : माण्डू

ऐतिहासिक नगरी माना जाने वाला मांडू इस समय पर्यटन के मानचित्र पर एक आलादा स्थान रखता है। माण्डू मालवा के समृद्ध इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह इंदौर से ९० कि.मी की दूरी पर विंध्य पर्वतमाला में स्थित है। माण्डू को रचने बसाने का प्रथम श्रेय परमार राजाओं को है। माण्डू अपनी भौगोलिक विशेषता के कारण उनकी ग्रीष्म की राजधानी बनी। बाद में दिल्ली के सुल्तान ने इस शहर पर विजय पाई और नाम दिया शादियाबाद, इस शब्द का तात्पर्य है ''आनंद नगरी''। यहां की हरी भरी वादियाँ, ये सब मिलकर माण्डू को मालवा का स्वर्ग बनाते हैं। जहाज महल, हिंडोला महल, जामा मस्जिद, मालिक मुगीस मस्जिद, रूपमती महल माण्डू के मुख्य दर्शनीय स्थल है। जहाज महल, माण्डू का एक खूबसूरत, ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह महल दो झीलों कापुर तालाब और मुंज तालाब के बीच बना हुआ है जो जहाज के जैसा दिखता है। यह महल फोटो खींचने के शौकीन पर्यटकों को अवसर प्रदान करता है। हिंडोला महल, माण्डू की शाही इमारतों में से एक है। यह भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण चिन्ह है और इसकी वास्तुकला भी काफी विख्यात है इस आदिवासी बहुल धार जिले में आने वाला मांडू सभी के लिए प्रिय है।

विभूति, परविंदर, आशीष, धीरज, योगेश की विशेष रिपोर्ट

देवियो का वास देवास -देवास,इन्दौर से मात्र ३५ किमी दूर बसा हुआ एक ऐसा जिला जहां बैंक नोट प्रेस चमड़ा उद्योग के साथ-साथ मां चामुण्डा का विशाल मंदिर है जो कि देवास टेकरी के नाम से पूरे मध्य भारत में प्रसिद्ध है। यह शहर अपने सोनाक्षीन उद्योग के कारण देश की सोना राजधानी के रूप में भी प्रसिद्ध है। देवास के इतिहास में मराठा साम्राज्य का वर्चस्व रहा है जिस कारण आज भी वहा हिन्दी के साथ मराठी भाषा भी बोली जाती है। देवास शहर का नाम देवी वैष्णो के नाम पर रखा गया है। यहां के लोगों की मान्यता है कि इस शहर में देवियों का वास है। देवास कई छोटे-बड़े उद्योगों का गढ़ है जिसमें चमड़ा उद्योग सबसे प्रमुख है,जो कि राष्ट्रीय ही नहीं अंतर राष्ट्रीय स्तर को प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। सरकारी संस्थानों की बात करें तो शहर में भारतीय रिजर्व बैंक की बैंक नोट प्रेस भी मौजूद है। देवास प्रदेश को धार्मिक स्थली के साथ-साथ अब औद्योगिक नगरी के रूप में भी उभर रहा है।

लज्जतों का शहर इंदौर

मालवा की एक प्रसिद्ध कहावत है। इसके अनुसार मालवा में आपको कहीं भी खान-पान में कोई कमी नहीं होगी। जिस प्रकार भारत में अतिथि देवो भव का संस्कार है, उसी प्रकार इंदौर में जब कोई अतिथि आता है तो हम उसे मालवा के व्यंजनों का आनंद जैसे मुंबई पहुंचते ही वड़ा पाव और दिल्ली में जाकर छोले भटूरे, इंदौर आए तो भिया पोहा-जलेबी नहीं खाया तो क्या खाया। मध्यप्रदेश की व्यावसायिक राजधानी और लज्जतों के शहर इंदौर की लोकप्रियता देश में ही नहीं, विदेश में भी है। इंदौरियों के दिन की शुरुआत जहां छप्पन की कट चाय, पोहा-जलेबी, कचोरी से होती है। वहीं दाल-बाफले, लड्डू दिन को पूरा करते हैं। शाम को इंदौरियों का जमावड़ा छप्पन पर देखने को मिलता है, वहीं सराफा की जायकेदार चाट रातों को और खुशनुमा बनाती है।

खाने के प्रमुख स्थान- सराफा बाजार दिन में इंदौर की अर्थव्यवस्था को मजबूती देता है और रात में यही बाजार तरह-तरह के व्यंजनों के जायकों से महक उठता है। यहां के स्वादिष्ट व्यंजनों में विजय चाट हाउस के खोपरा पेटीस, जोशीजी के दही बड़े, गरमा-गरम मालपुए, गुलाब जामुन पेश है। यहां हर मौसम की कचौरियां जैसे बटले की कचोरी, दाल की कचोरी, आलू-प्याज की कचोरी, ठंड में गराडू और भुट्टे का कीस उपलब्ध है।

छप्पन इंदौर की पहचान है। यहां आप स्थानीय जायकों का लुफ्त उठा सकते हैं। हॉट-डॉग, नमकीन, शिकंजी, चाट आदि सभी यहां की शान है। छप्पन इंदौर के युवाओं की पसंदीदा जगहों में से एक है, इसी वजह से यहां सुबह से लेकर रात तक चहल-पहल बनी रहती है। इंदौर के खान-पान की बात हो और आनंद बाजार का जिक्र ना हो ऐसा कैसे हो सकता है। यह हिस्सा अपने अंतर्राष्ट्रीय स्तर के व्यंजनों के लिए प्रसिद्ध है। यहां आपको शाकाहारी, मांसाहारी, मिठाई आदि सभी चीजें उपलब्ध है।

पूरे देश में इंदौर अपने नमकीन के लिए प्रसिद्ध है। दिल्ली का नेता हो या मुंबई का उद्योगपति। सभी इंदौर के नमकीन के जायके को पसंद करते है। यहां के सेव, मिक्चर, इत्यादि देशभर में भेजे जाते है। गुजरात में भेजे जाने वाले नमकीन खास यहां के लोगों के हिसाब से कम मिर्च वाले बनाए जाते है। यहां के लोग नमकीन के जायके का मजा भोजन के बाद स्वाद बदलने के लिए लेते है पर कई लोग नमकीन को मुख्य भोजन में भी शामिल करते है। शहर में बढ़ रहे नमकीन के लघु उद्योगों के विकास के लिए केंद्र सरकार ने नमकीन क्लस्टर की स्थापना की है। इसके लिए एमपीएकेवीएन की मदद से जमीन भी उपलब्ध करा दी गई है। इसकी वजह से जल्द ही इंदौर के नमकीन विश्वभर में निर्यात के लिए तैयार किए जाने लगेंगे। इंदौर के लोग नमकीन के साथ-साथ तरह-तरह की मिठाइयों को भी पसंद करते है। इसलिए यहां के लोग यहां के नमी की तरह ही मीठे है। यहां देश की हर प्रसिद्ध मिठाई उपलब्ध है, जैसे बंगाली मिठाई, महाराष्ट्र का श्रीखंड तथा गुजरात की प्रसिद्ध मिठाइयां। स्थानीय लोकप्रिय मिठाइयों में जलेबी, इमरती, मालपुए, रबड़ी इत्यादि प्रसिद्ध है। यहां की मिठाइयों को खासतौर पर उनके स्वाद व गुणवत्ता के लिए पहचाना जाता है। गत एक दशक में ड्रायफ्रूट आधारित मिठाइयों ने भी काफी प्रसिद्धि प्राप्त की है। इंदौर में आपको हर प्रांत, पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण के सभी प्रकार के व्यंजनों या खान-पान का संयुक्त जायका मिलेगा। आप इंदौर आए है तो यहां की मिठाई, नमकीन और कचोरी का स्वाद जरूर लीजिएगा।

विभूति वांगे और आशीष एलेक्स

सत्कार को तैयार

राष्ट्रीय युवा महोत्सव प्रवाह २०१५ के लिए देवी अहिल्या विश्वविद्यालय पूरी तरह से तैयार है। मध्यप्रदेश के किसी भी विश्वविद्यालय में पहली बार होने जा रहे इस आयोजन के लिए विश्वविद्यालय ने अपनी तैयारी पूरी कर ली है। १२ फरवरी से १६ फरवरी तक आयोजित इस राष्ट्रीय-युवा महोत्सव में देश भर के करीब ७० विश्वविद्यालयों के करीब १००० विद्यार्थी भाग लेंगे। देश भर के कई क्षेत्रों के विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी अपनी कला का प्रदर्शन करेंगे। कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए विश्वविद्यालय ने १५ समितियों का गठन किया है। देश भर से आए प्रतिभागियों के लिए ४ बॉयज हॉस्टल एवं चार गर्ल्स हॉस्टल में ठहरने की व्यवस्था की है। युवा उत्सव की विभिन्न प्रतियोगिताएं विश्वविद्यालय ऑडिटोरियम एवं ऑडिटोरियम के बाहर बने मुक्ताकाश मंच पर होंगी। प्रतिभागियों एवं मेहमानों का सत्कार मालवी व्यंजन से किया जाएगा जिसके लिए

विश्वविद्यालय स्थित इंडियन कॉफी हाउस ने विशेष तैयारी की है। युवा महोत्सव के शानदार आगाज के लिए पूरे तक्षशिला परिसर को एक अलग अंदाज में सजाया है। प्रवाह २०१५ को लेकर विश्वविद्यालय के विद्यार्थी खासे उत्साहित हैं, और लगभग २०० वालंटियर की टीम प्रतिभागियों के सत्कार को तैयार है। विश्वविद्यालय प्रबंधन के अनुसार विश्वविद्यालय राष्ट्रीय युवा महोत्सव प्रवाह २०१५ की मेजबानी के लिए पूरी तरह से तैयार है।

सूरज, धीरज एवं योगेश

We Speaks....

हमारी यूनिवर्सिटी में पहली बार आयोजित हो रहे राष्ट्रीय युवा महोत्सव को लेकर मैं बहुत उत्साहित हूं। पूरे देश से विद्यार्थी इसमें भाग लेंगे, सच में बहुत मजा आने वाला है।

विकास कुमार,
अर्थशास्त्र अध्ययनशाला

डी. ए. वी. वी. में होने वाले राष्ट्रीय युवा महोत्सव में हमें लघु भारत देखने को मिलेगा। देश भर से आए विद्यार्थी अपनी-अपनी संस्कृति का परिचय देंगे।

गौरव धर दुबे,
वाणिज्य अध्ययनशाला

राष्ट्रीय युवा महोत्सव का डी. ए. वी. वी. में आयोजन हमारे लिए गर्व की बात है। मैं इस युवा उत्सव में वालिंटियर हूं। इस अनुभव का भविष्य में बहुत लाभ होगा।

- रजत चौधरी,
आई.आई.पी.एस

PRAVAH REFLECTION OF INDIAN DIVERSITY

Cultural differences should not separate us from each other, but rather cultural diversity brings a collective strength that can benefit all of humanity. 'Unity in diversity'- These are not just words but something that country will experience in the 30th National Youth Festival-PRAVAH hosted by Devi Ahilya Vishwavidhyalaya, INDORE.

Youth festival is a 30 year old tradition that celebrates and commemorates the birth anniversary of youth icon Swami Vivekananda. It brings together the spirit of Indian culture which is showcased by the youth in this festival. Music, dance, literary, theatre and fine arts are part of our Indian society and these are the categories which are the part of our National Youth Festival. The participation of the students from the different corners of country itself discerns the importance of the event.

May it be down from the south, up from the north, right from the east, and left from the west. The students of all the region will portrait the vivid culture of India. This youth festival is aimed at honing skills among the young students, and infuses them with dynamism and self confidence. This is also to set them free from the stress of academic life. Approximately 970 participants in this glittering festival across 67 universities from 5 zones will render the cultural diversity of geographical feature of India. Among them to be named few are Banaras Hindu University, Vellore Institute of Technology, Mumbai University, Punjab University and various others. This youth festival gives a platform for variety of activities which not only reflects the spirit of friendship but also zeal amongs the students.

Srishti Jadhav &
Parvinder Arora

प्रधान संपादक - प्रो. (डॉ.) मानसिंह परमार, **संपादक** - साकेत रमण, **संपादन सहयोग** - सुश्री अमिता, डॉ.अंशु भाटी, डॉ. मनीषा शर्मा, डॉ. राजू सी.जॉन, डॉ.ललिता शर्मा, **सहायक संपादक**- निरंजन कुमार, जितेन्द्र जाखेटिया,
उपसंपादक- राजेन्द्र शुक्ला, सुधीश परदेशी, अमृता परमार, **प्रकाशक** : कुलसचिव देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर **मुद्रण** : श्री सर्वोत्तम इंदौर